द्वितीय अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु''

द्वितीय अध्याय
''विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु''

प्रस्तावना -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यास हिंदी साहित्य की अमूल्य देन है। वे प्रगतिशील कवियों में से एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। अज्ञेय ने जिन प्रयोगधर्मी रचनाकारों को तृतीय तार सप्तक में रखा है, उनमें सर्वेश्वरदयाल सक्सेना प्रथम पंक्ति के रचनाकार हैं। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का कथा-साहित्य के अलावा कविता, नाटक, पत्रकार, अनुवादक, संपादक और बाल-साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

2.1 कथावस्तु का स्वरूप -

कथावस्तु उपन्यास साहित्य का एक प्रमुख तत्त्व है। उपन्यास की कथा भिन्न-भिन्न घटनाओं, घात-प्रतिघातों से मिलकर बनती है उसे- 'वस्तु', 'कथावस्तु' तथा 'कथानक' कहा जाता है। कथावस्तु के बारे में डॉ. त्रिभुवन सिंह लिखते हैं- ''कथावस्तु के ढाँचे में ही उपन्यासकार घटनाओं के विभिन्न रंग भरकर अपने उपन्यास रूपी सुंदरतम चित्र का निर्माण करता है। चित्र-निर्माण में जिस प्रकार चित्रकार अनेक रंगों का प्रयोग करता है, उसी प्रकार उपन्यास लेखन में भी उपन्यासकार एकाधिक घटनाओं का यथाक्रम एक ही स्थान पर संकलन करता है।''[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि उपन्यासकार कथा निर्माण में भिन्न-भिन्न घटनाओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है।

कथानक उपन्यास का आत्मा होता है। उपन्यास समाज के आंतरिक तथा बाह्य घटनाओं का यथार्थ चित्रण करता है। उपन्यास की सफलता के लिए कथानक का सुसंगठित तथा रोचक होना अनिवार्य होता है। उपन्यास की कथा पाठक के मन में जिज्ञासा तथा कौतुहल निर्माण

---

1. डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग, पृ. 168

करती है । कथानक में मौलिकता, सत्यता, निर्माण-कौशल्य, संबद्धता, संभाव्यता तथा सुसंगठितता आदि गुणों की प्रधानता होना अनिवार्य होता है। कथानक के गुणों पर ही उपन्यास की सफलता-असफलता निर्भर होती है।

2.2 विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों की कथावस्तु इस प्रकार से है-

2.2.1 'सूने चौखटे' उपन्यास की कथावस्तु -

प्रस्तावना -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का 'सूने चौखटे' यह उपन्यास सन 1974 ई. में प्रकाशित हुआ। प्रकाशन क्रम की दृष्टि से सक्सेना जी का यह पहला उपन्यास है। इसे पेपरबैक संस्करण में 'उड़े हुए रंग' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास का शीर्षक प्रतिकात्मक शैली द्वारा दिया है। इस उपन्यास में नायिका कमला को आरंभ से अतं तक गहरी पीड़ा के साथ चित्रित किया है।

सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में नायिका कमला की मनोदशा का बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। यह उपन्यास प्रमुखतः निम्न मध्यवर्गीय परिवार में घटित प्रेम संबंध पर आधारित है। यह प्रेम प्रसंग मुख्यतः असफल, करुणाजन और दुखांत पर अश्रित हैं। यह उपन्यास आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी है। उपन्यास का प्रमुख पात्र कमला का जीवन अत्यंत करुणाजनक है। उसका सिर अंत में 'सूने चौखटे' की जड़ दीवारों के समान रहता है। प्रस्तुत उपन्यास को तीन अंशों में प्रस्तुत किया गया है। इसमें पहला अंश 'जर्जर पृष्ठभूमि', दूसरा अंश 'टूटी आकृतियाँ' तथा तीसरा अंश 'उड़े हुए रंग' आदि शीर्षकों से प्रस्तुत किया गया है। पहले अंश में बाल पात्रों द्वारा कमला की मानसिकता को स्पष्ट किया है। दूसरे भाग में कमला के नौ साल के बाद का चित्रण किया गया है। इसमें कमला अपने बचपन के साथी रामू को चाहने लगती है। उसके मन में उसके प्रति प्यार की भावना निर्माण होती है। तीसरे अंश में कमला और रामू की

तीन वर्ष बाद से मुलाकात होती है। उस समय कमला की शादी किसी दूसरे व्यक्ति से तय होती है। दोनों के जीवन का रंग ही उड़ जाता है। इसे प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट किया है।

'सूने चौखटे' उपन्यास का प्रारंभ जर्जर पृष्ठभूमि से होता है। इस उपन्यास में बाल पात्रों के माध्यम से कमला की मानसिकता को चित्रित किया गया है। यहाँ बालिका कमला अपने साथी रामू से अपना नाम लिखना सिखाती है। बालक-बालिका रामू तथा कमला का स्नेह बढ़ता है और वह स्नेह आगे प्यार में बदल जाता है। बालिका कमला जिस गली में रहती है उसका चित्रण करते हुए सर्वेश्वरदयाल जी लिखते हैं - "गली में अँधेरा छा गया था। कुछ तो डूबते हुए सूरज के कारण और कुछ उस गहरे धुएँ के कारण जिसे हर घर बेतहाशा उगल रहा था, रात उस मोहल्ले में जल्दी आ गई थी। गहरे धुएँ के परदों के पीछे उन कच्चे खपरैल के घरों में जलती हुई काली चिमनी का फीकापन डबडबाए नेत्रों से यह सूचित करता था कि साँझ उस मोहल्ले में कितनी उदास, भारी और थकी हुई-सी आई है।"[1] उक्त कथन से कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी ने निम्न मध्यवर्गीय समाज की पारिवारिक परिस्थिती का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

कमला अपने परिवार की परंपराओं का पालन करती है। जब रामू उसे लाला बालेदिन से बिस्कुट लाकर देता है, तब कमला उसे माँगकर लिया हुआ बिस्कुट है यह कहकर ठुकरा देती है। कमला रामू को अपनी माँ के डर के बारे में भी बताती है। कमला अपने साथी रामू के साथ गली में घूमती है। वह अंधी नानी की पीड़ा को जानती है। वह उससे बातें भी करती है। आगे खुन्नू मेहतर की गली में भी सैर करती है। दोनों शाम के समय अपने-अपने घर जाते हैं। रामू रात को सोते समय सुनता है कि कल से कमला भी उसके साथ स्कूल में जाएगी। यह बातें पिता से सुनकर रामू बेहद खुश होकर सोता है।

दूसरे दिन रामू कमला के घर जाता है। उस समय कमला की सौतेली माँ कमला को डाँट रही थी। वह कमला को रामू के साथ गली में घुमने पर प्रतिबंध लगाती है। वह कमला को चेतावनी देती हुई कहती है कि "आज अगर तू घर से बाहर गई तो तेरी टाँग तोड़ दूँगी। चार

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 6

दिन अभी शहर में आए नहीं हुआ कि इधर-उधर घूमने लगी। अगर यही हालत रही तो तुझे फिर से गाँव चाचा के पास भेज दूँगी। इतनी बड़ी हो गई, न घर काम न काज। किसी भी काम में तो हाथ बँटाया कर। तेरे इतनी बड़ी लड़कियाँ तो चूल्हा-चक्की सब कर लेती हैं। एक तू है चुड़ैल। डूब मर चुल्लू-भर पानी में।''[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि कमला की सौतेली माँ कमला को अपनी पुरानी पंरपरा में जकड़ना चाहती है। रामू यह सुनकर भय और ग्लानि से डर जाता है। वह वापस जाने लगता है। उस समय कमला के पिता की दृष्टि राम पर जाती है। वे उसको घर आने का कारण पूछते हैं तो वह बताता है कि मैं कमला को मिलने आया था। कमला के पिता कमला को रामू के साथ पढ़ाई के लिए तथा स्कूल जाने के लिए अनुमति देते हैं। वे नये विचारों के समर्थक हैं।

कमला अपनी शिक्षा के बारे में सचेत रहती है। वह रामू को प्रायमरी स्कूल के बारे में कहती है कि कैसे उसके मास्टर भोला पंडित अनुशासन करते थे ? गंगू तेली के लड़के ने किस प्रकार भोला पंडित पर गाना बनाया था ? वह बार-बार इस गाने को दूहराते हुए कहता है कि ''बैठे पंडित भोला, लेकर भंग का गोला।''[2] इस गीत को सुनकर रामू बहुत खुश होता है। वह अपने स्कूल के बारे में भी बताता है कि उसके स्कूल में उसे कभी भी मार नहीं मिली। किस प्रकार स्कूल में अमरूद और जामुन के पेड़ हैं ? यह बताने पर कमला बहुत खुश होती है। दोनों सैर करते हुए मेहतरों की गली में आते हैं। वहाँ खुन्नू मेहतर के बाजे को देखकर उसकी ओर आकर्षित होते हैं। दोनों तर्क-वितर्क करते हुए कल्पना में डूब जाते हैं। साँझ के समय कमला और रामू मंदिर का दिया चूराने का संकल्प करते हैं। उनका यह संकल्प मंदिर का पुजारी लाला आज का दिन अच्छा नहीं है यह बताकर आज की बात कल पर टाल देता है, तो कमला सोचती है कि साँझ जब जाने लगती है, तो अपना लाल दुपट्टा किसी पुराने पेड़ पर रखकर जाती है। यह सोचकर कमला साँझ

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 12
2. वही, पृ. 13

के समय पुराने पेड़ के नीचे जाती है, तो वहाँ बर्र उसे काटता है। रामू उसके सुझे हुए चेहरे को देखकर चिढ़ाता है। इस वक्त कमला रो पड़ती है।

कमला रामू के साथ स्कूल जाती है। कमला और रामू दोनों स्कूल जाते समय ही एक साथ होते हैं। बाकी के समय में रामू खेलने की धून में हमेशा मैदान पर ही रहता है। तो कमला स्वभाव से गंभीर तथा पढ़ने में तेज होने के कारण उसे सहपाठियों द्वारा आदर मिलता है। वह किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करती। उसके पास ही दूसरों के लड़ाई-झगड़े फैसले के लिए आते हैं। कमला उन लड़ाई-झगड़ों को अच्छी तरह से सुलझाती है। कमला स्कूल में ज्यादातर समय बगीचे में ही बीताती है। उसकी बगीचे में गूंगे माली के साथ दोस्ती होती है। कमला गूंगे माली से बागवानी की सारी चिजें सिखती है। रामू की बागवानी में रूचि न होने के कारण उसकी भी क्यारियों को कमला ठीक करती है।

रामू स्कूल में कमला का मास्टरनी से परिचय कराता है। उसके बाद वह अपनी स्हेली सीता से भी परिचय करा देता है। सीता एक मारवाडी सेठ की लड़की है। रामू सीता के बारे में कमला से बताता है कि उसके पास रंग-बिरंगी किताबें, कपड़े तथा सोने का बड़ा-सा लड्डू है। वह कमला को प्रश्न करता है कि 'सीता के पास बहुत अच्छे दुपट्टे हैं, तुझे उससे एक दिलवा दूँ ?' उस समय कमला रामू को सीता से बात न करने की सलाह देती है। इस बीच रामू कमला को चिढ़ाते हुए कहता है- "वाह, मैं क्यों न बोलूँ ? वह मुझे अपने हिस्से की मिठाई देती है। अपने साथ इक्के पर बैठाती है। तेरे पास मिठाई है, इक्का है।"[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि समाज के लोग पूँजीपति वर्ग की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं। इस कारण कमला सिसकती हुई बैठ जाती है। स्कूल की मास्टरीन कमला को सिसकती हुई देखती है। वह कमला को समझाती हुई धीरज देती है। उसी दिन से कमला को मास्टरनी के प्रति लगाव पैदा होता है। मास्टरनी हेमदीदी के सहयोग से और पढ़ाई में रुचि के कारण कमला को इनाम में रंग-बिरंगे किताबें भी मिलती हैं। स्कूल के उत्सव के दिन में कमला को पढ़ाई में और रामू को खेल-कूद में इनाम मिलता है। इस कारण दोनों बेहद खुश होते हैं।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 25

शाम के समय रामू अपनी नई फूटबाल को लेकर कमला के साथ अंधी नानी, लाला बालेदीन और खुन्नू को दिखाता है। रामू के फूटबाल की चर्चा इतनी होती है कि कमला के इनाम को सभी भूल जाते हैं। कमला का उत्साह भी खत्म हो जाता है। वह चूपचाप अपने घर आती है। कमला को देखते ही उसके बाबूजी की खुशीयों का ठीकाना ही नहीं रहता। वे कमला को बाजार ले जाते हैं और उसे जो चाहे वस्तु को खरीद लाते हैं। उस दिन रात में कमला की माँ का और बाबूजी का झगड़ा होता है। कमला की माँ कहती है कि उन्होंने फिजुल खर्च किया हुआ है। वह उन्हें टोकती है, तो बाबूजी अपनी बेटी की खुशी की दुहाई देते हैं। इस कारण कमला की सारी खुशियों पर पानी फेर जाता है। वही चिजें कमला एक बक्से में रखती है उसे कभी बाहर नहीं निकालती। इस पारिवारिक स्थिति का उसके बाल मन पर गहरा असर पड़ता है।

'सूने चौखटे' इस उपन्यास का 'टूटी आकृतियाँ' यह दूसरा अंश है। यह नौ वर्ष बाद से कथा शुरू होती है। इसी बीच कमला सत्रह साल की हुई है। कमला की बढ़ती उम्र पर उसकी माँ चिंतीत है। वह अपने पति को कमला के विवाह के बारे में सचेत करती हुई कहती है कि "लड़की सयानी हो गई है, सत्रह साल की उम्र कोई कम नहीं होती। कब तक पढाओगे उसे आखिर ? ज्यादा पढ़ जाएगी तो और मुसिबत बढ़ जाएगी। मेरी क्या, मैं तो सौतेली माँ हूँ, हर तरफ से बदनाम हूँ। भुगतना तुम्हें ही पड़ेगा। कमला के बाबूजी, अभी तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो, बाद में पछताओगे।"[1] अतः कहना गलत नहीं होगा कि हर एक माता-पिता को अपनी बेटी के विवाह के बारे में चिंता होती है।

कमला की माँ पुराने विचारों की है। उसे कमला के स्कूल में चल रहे मेल-मिलाप, दोस्तों के साथ गाना-नाचना, बातें करना, हँसी-मजाक करना आदि बातें खलती हैं। वह कमला के बाबूजी को कहती है कि कमला मर्दों के सामने खूब मटक-मटक कर नाचती है। कमला की यह हरकतें एक-न-एक दिन परिवार का मुँह काला करेगी और वह किसी के साथ भाग जाएगी। इस समय कमला के बाबूजी कमला पर विश्वास करते हैं। वे कमला के होनहार स्वभाव पर गर्व

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूखे चौखटे, पृ. 30

करते हैं। इस बीच कमला की माँ कमला की इतनी आज़ादी पर साफ-साफ विरोध करती है। वह स्वयं को इस परिवार में शून्य मानती है और चेतावनी देती हुई कहती है कि जब तक कमला इस घर में रहेगी तब तक मैं इस घर में पैर भी नहीं रखूँगी। यह कहती हुई वह फूट-फूटकर रोने लगती है। बाबूजी दृढ़ आवाजों में कहते हैं कि जब तक कमला इस घर में रहे तब तक ही मैं यहाँ रहूँगा, क्योंकि तुम्हें कोई कष्ट ना उठाना पड़े यहाँ आने का। कमला यह सब अपराधी भावों से सुनती है। वह निश्चय करती हुई बाबूजी को कहती है कि "अब मैं नहीं पढ़ूँगी बाबूजी, सच अब मैं नहीं पढ़ूँगी।"[1] उस समय बाबूजी कमला को साहस देते हुए कहते हैं कि जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक तुझे मेरा मानना ही होगा।

दूसरे दिन घर में गहरी खामोशी फैल जाती है। कमला देखती है कि माँ ने अपने हाथों से अलग पान बनाया और कमला ने बनाए भोजन को छुआ भी नहीं। वह दिन-भर भूखी रहती है। कमला उस दिन स्कूल नहीं जाती। बाबूजी के पूछने पर वह तबीयत खराब होने का कारण बताती है। वह दिन-भर कमरे में ही अपने बचपन की चिजों और किताबों को निहारती रहती है। उस दिन में बाबूजी भी कचहरी में नहीं जाते। वे घर के बैठक खाने में मित्रों के साथ काफी रात तक ताश खेलते रहते हैं। उस रात को घर का कोई भी सदस्य खाना नहीं खाता। कमला रात में जल्दी ही सो जाती है। वह सुबह देखती है कि बाबूजी घर में नहीं हैं और माँ ने अंदर से अपना कमरा बंद किया है। कमला एक पत्थर की मूर्ति की तरह कमरे की दोहरी पर देर तक बैठ जाती है। शाम के समय कमला को जब दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है तो वह दरवाजा खोल देती है। उस समय स्कूल का गूंगा माली हेमदीदी का पत्र लिए खड़ा हुआ पाती है। कमला जानती है कि अपने दर्द का बोझ हलका करने का एकमात्र ठिकाना हेमदीदी है। कमला माली के साथ जाते समय माँ से मिलकर जाना चाहती है, परंतु वह चाहकर भी उसे नहीं मिल सकती। कमला हेम दीदी के पास पहुँचते ही उससे लिपटकर रोती है। उस रात में हेम दीदी अपनी पीड़ादायी जीवन के रहस्य कमला को बताती है। वह अपने जीवन के रहस्य की लिखी हुई डायरी कमला के

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 41

हाथों में सौंपती है। कमला हेम दीदी की डायरी पढ़कर जानती है कि हेमदीदी ने कितनी पीड़ाओं का सामना किया है। उससे तो अपनी पीड़ा कुछ भी नहीं है। हेमदीदी की डायरी पढ़ने के उपरांत कमला के मन में उठे तेज तुफान लुप्त हो जाते हैं।

सुबह कमला का सारा सामान हेम दीदी के घर पहुँचता है। कमला को पता चलता है कि माँ अपने मायके चली गई है और बाबूजी का कोई पता नहीं मिलता। कुछ दिनों के बाद बाबूजी का पत्र कमला को आता है। वे लिखते हैं कि 'उसे घबराने की कोई जरूरत नहीं है। अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान देना। वे स्वयं के बारे में लिखते हैं कि उनका मन बहुत दिनों से ऊब रहा था, थोड़ा घूमने-फिरने से शांत हो जाएगा। वे रामू और उसके पिता से हुई मुलाकात को भी लिखते हैं। वह रामू अपने पिता के साथ किसी के शादी के समय उसी गाँव आनेवाला है, उसे मिलना आदि बातों से कमला को धीरज देते हैं।'

कमला को रामू की भेंट आठ साल के बाद होती है। कमला रामू के साथ पूरानी गली में घूमती है। दोनों बचपन की यादों को उजागर करते हैं। दोनों गूंगे माली से मिलते हैं। कमला साहित्य के बारे में जानना चाहती है, तो रामू उसे कहता है कि साहित्य जिंदगी को हरा करता है। वह सूखने नहीं देता। जहाँ सौंदर्य नहीं वहाँ भी सौंदर्य दिखाता है। साहित्य समाज को जीवन दे सकता है, लेकिन उसे किसी साँचे में नहीं ढाल सकता। कमला उसे राजनीति को अपनाने का सुझाव देती है। रामू कमला की इन बातों को काटता हुआ बताता है कि एक या दोनों से समाज परिवर्तित नहीं होता है, तो सामूहिक चेतना की शक्ति से सोचना आवश्यक होता है।

कमला और रामू दोनों लाला बालेदीन से मिलते हैं। उसको मिलकर दोनों लाला के मकान से बाहर आते हैं। उस समय गहरा अंधेरा छाया हुआ था। कमला बहुत घबराती है। वह रामू का कसकर हाथ पकड़ती हुई कहती है कि "देख मैंने मंदिर के इस दीपक के सामने तेरा हाथ पकड़ा है। इसे छुड़ाने की कोशिश मत करना। मैं इतना दर्द अकेले नहीं ढो सकती।"[1] उक्त कथन से द्रष्टव्य होता है कि कमला प्यार का दर्द सह नहीं रही है। वह भावना विवश होकर रोने

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 50

लगती है। उस समय रामू स्थिति को बदलने के लिए झूठी हँसी हँसकर कहता है कि "लेकिन मैं तुझे प्यार जो नहीं करता।"[1] उस समय कमला बेहद हताश होती है। वह रामू का हाथ छोड़ देती है। रामू घबराता हुआ कमला से अपनी गलतियों पर माफी माँगता है। रामू की आवाज भर जाती है। कमला रामू की स्थितियों को देखती है। वह भारी मन से रामू का फिर हाथ पकड़ती बेंच पर जा बैठती है। बेंच पर कमला रामू की गोद में सिर रखकर फूट-फूटकर रोती है। रामू कमला को रोने देता है क्योंकि रोने से उसका दर्द हलका हो जाता है। रामू कमला को रोने का कारण पूछता है, उस समय कमला रामू को कहती है कि "शायद यह रस्सी टूटने से बच जाए और गाँठे भीगकर मजबूत हो जाएँ।"[2]

कमला रामू से मिलती है, उसके साथ घुमती है, परंतु उनके जीवन का सफेद फूल नहीं फूलता। कमला पुराने मूल्यों को ढोती है। उसी कारण से वह रामू के साथ भाग नहीं जाती। वह अपने परिवार का कलह, स्थिति का दबाव उसके मन पर हमेशा विराजमान होता हुआ दृष्टिगोचर होता है। वह रामू को बड़ा आदमी बनाना चाहती है, क्योंकि वह रामू को प्यार करने, रोने और मर जाने से बचाना चाहती है। कमला भीतर से टूट जाती है।

'सूने चौखटे' इस उपन्यास का 'उड़े हुए रंग' यह तीसरा अंश है। यह तीन वर्ष बाद से कथा प्रारंभ होती है। इसी बीच कमला बीस साल की हुई है। उस समय से कमला के जीवन की त्रासदी से कहानी का प्रारंभ हो जाता है। यह प्रतिभाशाली कमला घुट-घुटकर क्षय की बीमारी का शिकार होती है। उसे वैद्य जी से इलाज किया जाता है, परंतु उसकी बीमारी का कारण जानने में वैद्यजी असफल रहते हैं। कमला के बाबूजी वैद्यजी को दूर छोड़कर वापस आते हैं। वे कमरे के बाहर दालान में ही घर की नौकरानी से कहते हैं कि "समझ में नहीं आता क्या करूँ ? उधर गाँव में बड़े भाई जोर दे ही रहे हैं, इधर आज वैद्यजी भी कह रहे थे कि आठ-दस दिन में कमजोरी तो चली जाएगी, घूमने-फिरने लायक हो जाएगी, लेकिन तुम उसकी शादी कर दो। आधी से अधिक

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 60
2. वही, पृ. 62

बीमारी शादी के बाद चली जाएगी। अभी रोग की शुरूआत है।"[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि कमला की बीमारी की गहराई को देखकर उसके बाबूजी चिंतित हैं।

कमला के बाबूजी कमला की शादी से चिंतित बरामदे में टहलने लगते हैं। उस समय कमला के मन में अनेक प्रश्न निर्माण होते हैं। अखिरकार कमला का विवाह एक धनी व्यापारी के लड़के के साथ तय होता है। इसी बीच कमला मास्टरनी हेमदीदी, सीता और दोस्त रामू को चिठ्ठियाँ लिखकर यह शुभ संदेश भेजती है। उसके बाबूजी कमला का बड़े धूम-धाम से विवाह करते हैं। उस समय विवाह में रामू भी आता है और विदा करने के लिए स्टेशन पर चला जाता है। कमला अपनी आखरी इच्छा में रामू को सुखी रहने का संदेश देती है। इसके बारे में कमला का कथन द्रष्टव्य है कि "हाँ! नहीं तो मैं तेरे साथ भाग चलती। लेकिन जानती हूँ दुनियाँ से लड़ने की ताकत अभी मुझमें-तुझमें नहीं है। तुझमें हो भी पर मुझमें नहीं है। ऐसे जर्जर शरीर को लेकर करेगा भी क्या ? लेकिन अगर किसी और से प्यार हो जाए जिसमें समाज से लड़ने की ताकत हो तो उसके साथ जरूर भाग जाना। समझ लेना वह मैं हूँ और खूब सुख की जिंदगी बिताना।"[2] उक्त कथन से कहना सही होगा कि कमला हमेशा रामू को सुखी रहने का संदेश देती है। कमला अपनी मर्यादा के कारण रामू को पा न सकी और रामू अपनी सीमा में रहकर कमला से वंचित रहता है। कमला गहरे दर्द के साथ अपने ससुराल चली जाती है। उपन्यास का अंत गहरी त्रासदी से होता है।

उपर्युक्त कथा सूत्र के साथ-साथ सर्वेश्वर जी ने कमला की माँ, पिताजी, लाला बालेदीन, अंधी नानी, खुन्नू मेहतर, रामगुलाम, मास्टरनी हेमदीदी, गूंगा माली आदि से जुड़ी उपकथाओं को बड़ी मार्मिकता के साथ स्पष्ट किया है। उपन्यास में घटना बहुलता की विशेषता है, जो सरसता तथा रोचकता के साथ स्पष्ट हुआ है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 74
2. वही, पृ. 88

2.2.2 'सोया हुआ जल' उपन्यास की कथावस्तु -

प्रकाशन क्रम की दृष्टि से 'सोया हुआ जल' सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रथम संस्करण सन् 1997 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा हुआ। पचास पृष्ठों का यह उपन्यास मध्य वर्ग एवं निम्न-मध्यवर्ग के जीवन के कुंठा, तृष्णा एवं घुटन का अत्यंत मार्मिक वर्णन इस रचना में किया है। इस बारे में डॉ. राजमल बोरा की मान्यता है, "यह एक नये ढंग का, अपने आप में अनूठा, नये शिल्प से सजा, विभिन्न पात्रों का समकालवर्तित्व मनस्थितियों का विश्लेषण करनेवाला, पात्रों के बाह्य व्यवहारों और उनके भीतर की प्यास को व्यक्त करनेवाला और यह सब कुछ सांकेतिक या प्रतीकात्मक पद्धति से लिखा हुआ उपन्यास है।"[1] सर्वेश्वर सक्सेन जी ने विवेच्य उपन्यास में पात्रों की मनःस्थितियों का बाह्य एवं भीतरी इच्छाओं का प्रकटीकरण सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक शैली में किया है। इसमें स्वप्नों के द्वारा अचेतन मन में घटित घटनाओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। सर्वेश्वर जी के 'सोया हुआ जल' उपन्यास के बारे में डॉ. सरोजनी त्रिपाठी की मान्यता है कि " 'सोया हुआ जल' उपन्यास अचेतन मन का प्रतीक है।"[2] अतः स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यास के माध्यम से अचेतन मन की अभिव्यक्ति की है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास की घटना सिर्फ एक रात की है। इस संदर्भ में ओमप्रकाश शर्मा लिखते हैं- " 'सोया हुआ जल' में दिखाया गया है कि जाग्रतावस्था का आचरण विश्वासनीय नहीं है। उसका वास्तविक रूप स्वप्न-जगत् में ही प्रमाणित होता है।" अतः स्पष्ट है कि विवेच्य उपन्यास में चेतन अवस्था की जगह अचेतन को ज्यादा महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। इस उपन्यास में एक ताल के किनारे में स्थित यात्रिशाला के विभिन्न कमरों में ठहरे हुए यात्रियों की मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण उपन्यास का केंद्रीय विषय है। उपन्यास का प्रारंभ कमरा नं. 1 में जहाँ राजेश और विभा दोनों से होता है। वे दोनों किशोर की खोज के लिए आए हैं। कमरा

---

1. डॉ. राजमल बोरा - हिंदी उपन्यास : प्रयोग के चरण, पृ. 193
2. डॉ. सरोजनी त्रिपाठी - आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वस्तु-विन्यास, पृ. 260

नं. 2 में किशोर और रत्ना ठहरे हैं। रत्ना किशोर की प्रेमिका है, जो एक रईस सेठ की बेटी है। वह किशोर के साथ हजार-बारह सौ के जेवर लेकर घर से भाग आयी है। किशोर का मित्र दिनेश कमरा नं. 7 में ठहरा हुआ है, जो किशोर और रत्ना को भागने में मदद करता है। यात्रीशाला का एक बूढ़ा पहरेदार भी है, जो कमरों में होनेवाली बातचीत को सुनता है, या घटित होनेवाले दृश्यों को देखता भी है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में राजेश और विभा पति-पत्नी हैं, जो यात्रीशाला में ठहरे हैं। वे दोनों राजेश के भाई किशोर की दिनभर तलाश करते हैं। किंतु किशोर का कुछ पता नहीं चलता। इसलिए थककर लौटने लगते हैं। चलते समय राजेश पत्नी विभा को किशोर की गैरजिम्मेदारी हरकत के बारे में कहता है कि "हर आदमी अपनी जिंदगी का जिम्मेदार खुद होता है। जो पत्थरों में चलने पर ही आमादा हो उसे ठोकरें लगेंगी ही।"[1] अतः कहना गलत नहीं होगा कि किशोर को ही वे दोषी नहीं मानते तो आदमी की गैर जिम्मेदारी को भी प्रमुख मानते हैं।

राजेश और विभा कमरे में प्रवेश करते ही हरी रोशनी जलाते हैं। यह हरी रोशनी राजेश के प्यार और विभा के सौंदर्य को निखारने का काम करती है। राजेश रात को कुछ पत्रों के जवाब लिखना चाहता है। विभा उन्हें आराम करने की सलाह देती है। परंतु राजेश लिखने का कार्य शुरू करता है। कमरे में गहरी खामोशी छायी हुई है। कुछ समय के बाद विभा रात को अचेतन मन में बड़बड़ाती है कि वह किशोर के प्यार का खंडण करती हुई अपने प्यार की दुहाई देती हुई राजेश से कहती है कि विवाह के पहले हम-तुम एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं थे। विवाह के बाद हम एक-दूसरे को प्यार करते हैं। उसी वक्त राजेश विभा को संबोधित करता है कि "तुम यह सब दर्शन सोच रही हो या सो रही हो ?"[2] यहाँ विभा की अचेतन मन की स्थिति को स्पष्ट किया है। इस वक्त विभा राजेश को बताती है कि जब तक तुम सो नहीं जाते तब तक मैं नहीं सो जाऊँगी। राजेश विभा का कहा मानकर सो जाता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 11
2. वही, पृ. 12

राजेश और विभा चेतन मन से एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं। परंतु अचेतन मन से अपने अतित के प्रेमी और प्रेमिका को चाहने के कारण वे एक-दूसरे के साथ होकर भी मानसिक रूप से दूर हो जाते हैं। विभा स्वप्नलोक में देखती है कि वह पुराने प्रेमी मोहन के साथ नाव में बैठकर दूर जा रही है। वह मोहन के साथ हमेशा रहना चाहती है। तब मोहन उसे समझाते हुए कहता है कि ''मेरे साथ ? जिसके घर-द्वार, माँ-बाप, भाई-बहन कहीं कोई नहीं है, जो अनाथ है ? जो महज तूलिका चलाना जानता है और उलटे-सीधे चित्र बनाकर जिंदगी गुजारता है, उसके साथ तुम रहोगी ? मैं इस लायक नहीं हूँ कि तुम्हें अपने साथ रख सकूँ। नहीं, तुम मेरे साथ सुख से नहीं रह सकोगी।''[1] अतः कहना सही होगा कि मोहन अपनी गरीबी और व्यावसायिक असफलता के कारण विभा को ठुकराता है। इसी कारण मोहन विभा को नाव से उतरने को कहता है। उस वक्त विभा उससे नाव से उतरने को इन्कार करती है। तब मोहन विभा को स्वयं नदी में कुदने की धमकी देता है। इसी बीच वक्त विभा स्वप्न से जाग जाती है। वह बहुत घबराती है।

विभा दूसरी बार स्वप्न में देखती है कि मोहन उसका बड़ा-सा चित्र कंधों पर रखकर आ रहा है। विभा मोहन की सहायता करना चाहती है, लेकिन मोहन उसकी सहायता लेने से इन्कार करता है। मोहन विभा से प्यार करने का रहस्य जानना चाहता है। तब विभा प्रत्युत्तर में कहती है कि ''तुम्हीं वह एक क्षण हो जहाँ मेरी सारी जिंदगी का सूत्र बँधा हुआ है। जहाँ कुछ न पाकर भी मैं तृप्त रहती हूँ, जहाँ अशक्त होते हुए भी मैं सशक्त अनुभव करती हूँ। जहाँ हर अभाव में भी भरी-पूरी लगती हूँ।''[2] अतः उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विभा अपने पति से तृप्त नहीं है। वह मोहन के साथ रहकर तृप्त होती है। विभा का अपने प्रति प्यार देखकर मोहन उसे गाड़ी में बिठाकर अपने घर ले जाना चाहता है। किंतु विभा चाहकर भी उसके साथ नहीं जा पाती।

विभा के साथ सोया हुआ राजेश स्वप्न में देखता है कि एक गोरी लड़की उसके गोद में लेटी है। जो कि वह विदेशी है, हिंदुस्तानी नहीं। राजेश को उसके साथ प्यार हो जाता है। वह उसके साथ घुमता है, गाता है तथा कहकहे लगाता है, दौड़ता है, दोनों पीते हैं। वे दोनों मिलकर

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 16
2. वही, पृ. 25

... BALA ... LIBRARY

हरि डालियों पर उछलकर बैठते हैं। राजेश और गोरी लड़की किनारे लगे हुए जहाज के डेक पर अलिंगनबद्ध खड़े हैं। उसी वक्त दूर किनारे से आँसू भरे आँखों से विभा राजेश और गोरी लड़की को देखती है। विभा की ओर देखते ही राजेश और गोरी लड़की कहकहे लगाते हुए जहाज से दूर चले जाते हैं। उसी समय राजेश देखता है कि विभा का मृत शरीर भंवरों के हाथों में फँस गया है। इसी बीच गोरी लड़की के बालों में विभिन्न रंगों के रिबन लगाते हुए उसे अपने बाहुओं में कस लेता है।

दूसरी ओर उसी यात्रिशाला में कमरा नं. 2 में किशोर और रतना ठहरे हुए हैं। किशोर अपनी प्रेमिका रतना के साथ घर से भाग आया है। किशोर के साथ आयी हुई रतना एक पूँजीपति सेठ की इकलौती बेटी है। वह घर से भागते हुए अपने साथ हजार-बारह सौ के जेवर लेकर किशोर के साथ भाग आयी है।

किशोर यात्रिशाला के रजिस्टर में अपने भैय्या और भाभी का नाम देखकर बहुत घबरा जाता है। उस समय वह रतना को छोड़कर भाग जाना चाहता है। वह अपने मन की स्थिति रतना को संबोधित करते हुए कहता है कि "मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे साथ इस तरह दर-दर भटकना अच्छा नहीं लगता। बड़े बाप की बेटी हो। इतना कष्ठ उठा सकना तुम्हारे बूते के बाहर है। तो फिर जाओ, मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दो। मेरे लिए तुम क्यों मुसीबत उठाओगी।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि किशोर की यहाँ पलायनवादी वृत्ति दृष्टिगोचर होती है। उस समय रतना किशोर की हर समय सहायता करना चाहती है, परंतु किशोर के ठुकराने पर फुट-फुटकर रोती है। रतना किशोर को दोनों मिलकर घर जाने की तथा बाबूजी का मन परिवर्तन करने की बात करती है। तब किशोर रतना को कहता है कि मैं भैया-भाभी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहा हूँ। तब रतना प्रत्युत्तर में क्रोध भरे स्वर में किशोर को संबोधित करती हुई कहती है कि "फिर तुम जैसा उचित समझो करो। डूब मरने को कहोगे, डूब मरूँगी।"[2] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि रतना का किशोर के प्रति क्रोध स्पष्ट है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 13
2. वही, पृ. 20

रतना कमरा नं. 2 में सो रही थी। उस वक्त किशोर थैले से एक शराब की बोतल निकालकर कमरा नं. 7 के आगे आता है और दिनेश को आवाज देकर बाहर बुलाता है। उस समय कमरा नं. 2 में सो रही रतना बड़बड़ाती हुई किशोर को कल के जाने के बारे में बताती है। लेकिन किशोर की ओर से प्रतिसाद न मिलने पर रतना किशोर को 'इतनी जल्दी सो गये क्या ?' ऐसा कहती हुई सो जाती है। इसी बीच किशोर दिनेश को लेकर ताल की सीढ़ियों पर ले जाता है। वहाँ किशोर दिनेश को अपने साथ लायी हुई शराब की बोतल उसे सौंप देता है। दिनेश शराब पीते समय किशोर को भी शराब पीने की जिद करता है। परंतु किशोर शराब पीने से इन्कार करता है। तब दिनेश किशोर को कहता है कि तुम्हें तो मुहब्बत का नशा चढ़ा हुआ है। उस समय प्रत्युत्तर में किशोर दिनेश को संबोधित करता हुआ कहता है कि "मुझे तुम्हारे उपदेश की जरूरत नहीं है। मुझे कल सूरज निकलने के पहले ही यहाँ से हटना है। इसका सारा इन्तजाम तुम्हें करना होगा।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि किशोर दिनेश को अपने जाने का इन्तजाम करने की बात कहता है।

किशोर दिनेश के पास से वापस कमरे में लौटते ही बत्ती जलाता है, तब सो रही रतना की नींद टूट जाती है। उसी वक्त रतना किशोर को कहती है कि यहाँ मेरा जी घबरा रहा है, तुम मुझे छोड़कर कहाँ गये थे। इसी बीच किशोर बताता है कि मैं कल के जाने की तैयारी करने के लिए गया था। तुम जैसे कहो वैसे मैं करूँ तो कल मैं भैया-भाभी के हाथ पड़ जाऊँगा। और मेरी दुर्गति हो जाएगी। वह आगे रतना को संबोधित करता हुआ कहता है- "तुम्हारा कुछ नहीं होगा। अपने बाबूजी की तुम लाड़ली बेटी हो। वह तुम्हें दुलार-चुमकार कर फिर रख लेंगे। समाज में भी कोई ऊँगली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकेगा। लोग यही समझ-समझा लेंगे कि लड़की अपनी किसी सहेली से मिलने गयी थी। पैसा समाज के नियमों पर हुकूमत करता है। लेकिन हम तो गरीब हैं- हमें तो...।"[2] उपर्युक्त कथन से सर्वेश्वरदयाल सक्सेनाजी ने समाज में स्थित पूँजीवादी वर्ग की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 21
2. वही, पृ. 23

रतना किशोर को छोड़कर अपने घर लौटना चाहती है। उसी वक्त वह ताल के पास सीढ़ियों पर बैठे हुए दिनेश के पास आ जाती है। वह दिनेश को किशोर से छुटकारा पाने की बात बताती है। तब दिनेश रतना को किशोर को छोड़ने का कारण जानना चाहता है। रतना दिनेश को बताती है कि किशोर ने मुझे प्यार में धोखा दिया है। रतना दिनेश को किसी भी कीमत पर वहाँ से छुड़ाने के लिए कहती है। तब दिनेश रतना को संबोधित करता हुआ कहता है कि "जो नारीत्व की कीमत लगाने को तैयार है, उससे कीमत बोलना अपने को नीचे गिराना है। मैं अपने को नीचे नहीं गिराना चाहता, देवी जी ! मैं आपको महज इतना बताना चाहता हूँ कि प्रतिकार की भावना से भरी हुई औरत शराब से भी ज्यादा गंदी होती है। मैं शराबी हूँ, यों ही अधम हूँ, आपसे बोलकर आपके निकट बैठकर, आपको स्पर्श कर और अधिक गंदा अधम नहीं होना चाहता।"[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि यहाँ दिनेश के शराबी होकर भी नीति विषयक (मानवतावादी) मूल्य दिखाई देते हैं। उसी वक्त रतना क्रोध में फुफकारती हुई वापस किशोर के पास जाती है।

यात्रीशाला के कमरा नं. 2 में किशोर और रतना एक-साथ सोये हुए हैं। वे दोनों वास्तविक रूप में एक-दूसरे के प्रति घृणा करते हैं, किंतु अचेतन मन से एक-दूसरे को चाहते हैं। किशोर स्वप्नलोक में देखता है कि वह दूल्हा बनकर सजी हुई गाड़ी के साथ विवाह मंडप में आया हुआ है। तो रतना सज-धज कर, शृंगार करके वधू के रूप में विवाह मंडप में आयी है। विवाह के फेरे लेते समय बंधी हुई गांठ छूट जाती है और किशोर अकेले ही फेरे लेता है। वह दोनों भीड़ से जाते समय रतना भीड़ में खो जाती है। वह हताश होकर अकेले ही रास्ते से जा रहा है। उसी समय रतना नीली ब्यूक गाड़ी में किसी और के साथ जाती है। दूसरी ओर किशोर देखता है कि विभा और राजेश रिक्शों से जा रहे हैं। उसी समय किशोर विभा का हाथ अपनी ओर खिंचता है, किंतु वास्तव में वह रतना का ही हाथ खिंचता है। उसे एक ओर रतना का हाथ और दूसरी ओर विभा का हाथ दिखाई देता है। अतः यहाँ किशोर अचेतन मन से रतना और भाभी विभा दोनों को चाहता है। किशोर का मानना है कि प्रेमिका रतना से विवाह करने पर अपने भाई राजेश और विभा का संबंध

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 31

विच्छेदन होगा। किशोर यह नहीं चाहता कि भाभी से संबंध टूट जाए क्योंकि वह अचेतन मन से भाभी को चाहता है।

किशोर के साथ सो रही रतना स्वप्न लोक में देखती है कि वह ट्रेन से घर जा रही है। उसी समय दिनेश द्वारा ट्रेन को रोकने का असफल प्रयास किया जाता है। वह देखती है कि दिनेश का मृत शरीर पटरी के पास पड़ा हुआ था। वह खुश होकर ट्रेन से घर जाती है। रतना घर पहुँचते ही उसके बाबुजी उसे गले लगाते हैं। रतना किशोर को जेलखाने में बंद देखती है। उसे देखकर रतना गर्व से किशोर को कहती है कि चाहूँ तो मैं तुम्हें उसी वक्त छूड़ा सकती हूँ। किशोर के आँखों में आँसू आते हैं। रतना बाबूजी को संबोधित करती हुई कहती है कि "मैं किशोर के बिना नहीं रह सकती बाबूजी !"[1] उक्त कथन से रतना का किशोर के प्रति सच्चा प्यार दिखाई देता है। यह सारा माहौल देखकर रतना के बाबूजी बहुत खुश हो जाते हैं और एक बड़ी पार्टी का आयोजन करते हैं। उस पार्टी में रतना अपनी उँगली से मामुली अंगुठी निकालकर फेंक देती है और किशोर को हीरे की अंगुठी की माँग करती है। तब किशोर अपनी जेब में से हीरे की अंगुठी निकालकर उसे पहनाता है। यहाँ सर्वेश्वर जी यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि रतना भले ही गरीब किशोर से प्यार करती है, लेकिन उसके पूँजीपति वर्ग के संस्कार को वह अंत तक नहीं छोड़ पाती। विवेच्य उपन्यास में राजेश, विभा, किशोर तथा रतना आदि गौण कथाओं के साथ-साथ प्रकाश, बेकार युवक की, तारवाला आदि की कथाओं का चित्रण कम-अधिक मात्रा में मिलता है, जो कथानक को आगे बनाने में सहायता करता है।

अतः हम कह सकते हैं कि 'सोया हुआ जल' उपन्यास में अचेतन मन में घटित घटनाओं को मार्मिकता से स्पष्ट किया है। इसमें पात्र चेतन मन की इच्छा पूर्ति अचेतन मन के द्वारा पूरा करते हैं।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 43

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि यथार्थवादी रचनाकार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक शैली में दिया है। इसका आरंभ जर्जर पृष्ठभूमि से होकर अंत गहरी करुणता से हुआ है। इसमें मध्यवर्गीय परिवार में घटित असफल प्रेम कथा का चित्रण मिलता है। विवेच्य उपन्यास की नायिका कमला मन से प्रेमी रामू को बहुत चाहती है, परंतु सामाजिक परंपराओं तथा पारिवारिक मर्यादा के कारण प्रेमी रामू का त्याग करती है। इस कारण कमला परिवार की मर्जी से धनी व्यापारी के बेटे से शादी करती है। विवाह के बाद परिवारवालों से विदा लेती है। इस समय उसे सचमुच ही मन की जड़ता में सूने चौखटे का अभास होता रहता है। विवेच्य उपन्यास की नायिका कमला में भारतीय नारी के परंपरागत, उदात्त, त्यागमय और मर्यादावादीता आदि गुण दिखाई देते हैं। इसके साथ-ही-साथ सर्वेश्वर जी ने निम्नवर्गीय समाज की जड़ता तथा पीड़ादायी जीवन का मार्मिक रूपों में चित्रण किया है। इसमें समाज की परंपरा, मूल्य व्यवस्था आदि पर व्यंग्यात्मक रूपों में प्रकाश डालकर उसमें बदलाव लाने का प्रयास सर्वेश्वर जी ने किया है।

'सोया हुआ जल' सर्वेश्वर जी का मौलिक लघु-उपन्यास है। इसका शीर्षक प्रतीकात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इनमें बीमार बूढ़ा पहरेदार यात्रिशाला को पहारा देता है। उस समय वह यात्रिशाला के कमरों से भिन्न-भिन्न आवाज सुनता है। सभी पात्र स्वप्न में विचरण करके अपनी इच्छा पूर्ति अचेतन में करते हैं। इस कारण सभी पात्रों का जीवन अशांत है- जिसमें कोई नौकरी के नियुक्ति पत्र की प्रतीक्षा में, तो कुछ 'रायल्टी' का नाम लेखक भूखे सोते हैं, कुछ इंद्रीय सुख की भूख में व्याकुल हैं, कुछ प्रसन्नता की खोज में जीवन को व्यर्थ करते हैं। इस प्रकार से 'सोया हुआ जल' अंतश्चेतन में सोई हुई आंतरिक प्यास ही है, जो समाज में आज भी मनुष्य की भीतरी प्रवृत्तियों को उजागर करती है।